बाबू जगजीवन राम की समृति में जन्मशती *समारोह* में भारत की *महामान्या* राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील का भाषण

संसद भवन, नई दिल्ली, 5 अप्रैल, 2008

देवियो और सज्जनो,

बाबू जगजीवन राम की समृति में आयोजित जन्मशती समारोह में भाषण देते हुए मुझे गर्व हो रहा है । बाबूजी, जिस नाम से वे लोकप्रिय थे, उनके जन्म के सौ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन हमारे देश के सबसे महान नेताओं में से एक को दी जाने वाली सर्वाधिक उपयुक्त श्रद्धांजलि है ।

बाबू जगजीवन राम ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र निर्माण में बहुत अधिक योगदान दिया । एक राष्ट्रीय नेता और सांसद के रूप में उनकी सशक्त उपस्थिति थी और उन्होंने भारत के राजनैतिक और संवैधानिक विकास को स्वरूप देने में और सामाजिक परिवर्तन लाने में भी पांच दशक से अधिक समय तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । कार्य के प्रति उनका समर्पण, मानवीय गरिमा में उनकी आस्था और किसी भी व्यक्ति के प्रति दुर्भाव नहीं रखने और सभी के प्रति दया भाव रखने संबंधी उनके दर्शन के कारण वे अनुपम व्यक्तित्व बन गए ।

उनका जीवन हम लोगों के लिए सबक है कि व्यक्ति कैसे सफल हो सकता है और कठिन परिस्थितियों, अड़चनों और चुनौतियों के बावजूद समाज और देश के प्रति सकारात्मक योगदान दे सकता है । सन् 1908 में अत्यंत दलित परिवार में जन्म लेने के बाद अल्पायु में ही उनके ऊपर से पिता का साया हट गया ।

अबोध जगजीवन राम के पालन पोषण की जिम्मेवारी उनकी माता की थी जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से यह सुनिश्चित किया कि बाबू जगजीवन राम अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए इसे पुरा कर सके । यह शिक्षा ही थी जिससे बाबू जगजीवन राम को राष्ट्र और समाज की सेवा करने की क्षमता प्राप्त हुई । अब भी लोगों का जीवन सुधारने के लिए और समाज में उपेक्षित वर्गों की अधिकारिता के लिए शिक्षा एक आधार और मूलभूत आवश्यकता है । सरकार समाज और परिवारों का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा प्राप्ति को सुनिश्चित करे ।

जगजीवन राम की माँ जिन्होंने सामाजिक और आर्थिक कठिनाईयों के बावजूद यह सुनिश्चित किया कि उनके बच्चे को शिक्षा मिले, उनकी ही तरह मैं सभी माता-पिता से आह्वान करती हूँ कि वे सुनिश्चित करें कि उनके बच्चे, बालक, बालिका दोनों स्कूल जाएं ।

सभी के लिए प्राथमिक़ शिक्षा हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता और दायित्व है । दलित और उपेक्षित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के लिए हमें विशेष प्रयास करना है बहुत से ऐसे होनहार लड़के और लड़कियां है जिनमें समाज के लिए कुछ करने की छिपी हुई प्रतिभा और भावना है । तथपि उनकी क्षमता की पहचान की जानी चाहिए और राष्ट्र निर्माण के प्रयोजनार्थ इसे एक दिशा प्रदान की जाना चाहिए ।

विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक नेताओं को आगे आकर ऐसे छात्र, छात्राओं को संरक्षण प्रदान करना चाहिए ताकि बाबू जगजीवन राम के जीवन की ही तरह युवकों की आरंभिक प्रतिभा, आशावाद और आदर्श को मुखरित होने का पर्याप्त अवसर मिल सके । इस संदर्भ में यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के निमित्त शिक्षा योजनाओं को लागू किया जाए और इनकी उचित निगरानी हो । इसके अलावा ऐसे परिवारों से आने वाले बच्चों को सुविधाएं दी जानी चाहिए जिससे उन्हें समाज के अन्य वर्गों के समकक्ष आने में मदद मिलेगी । छात्रावास सुविधा, पौष्टिक आहार और अतिरिक्त कोचिंग क्लास ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है । मुझे जानकारी मिली है कि बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना इस वर्ष शुरू की गई है जिसके अंतर्गत छात्रावास का निर्माण किया जाएगा । यह योजना बाबूजी के प्रति एक बड़ी श्रद्धांजलि है जो जीवन भर शिक्षा के क्षेत्र में प्रयासरत रहे । यह भी हर्ष की बात है कि उनकी पुत्री और सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्रीमती मीरा कुमार के ऊपर इस योजना के कार्यान्वयन का दायित्व है। निश्चित तौर पर एक उज्ज्वल भारत और अपने पिता के दर्शन का लक्ष्य इस योजना को प्रभावी रूप से लागू करने में सशक्त प्रेरणा स्रोत होगा ।

बाबू जगजीवन राम द्वारा निर्धारित मानक और उनके आदर्श अनुकरणीय हैं। वे सभी व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आए, उन्होंने उनकी बौद्धिक क्षमता, स्पष्ट विचार और संगठनात्मक कौशल की सराहना की । पं. मदन मोहन मालवीय युवा जगजीवन राम से इतना अधिक प्रभावित हुए कि जब वे 1925 में उनसे आरा में मिले तो उन्होंने जगजीवन राम को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस 1928 में उनसे कलकत्ता में मिले जब उन्होंने मजदूर रैली का आयोजन किया था जिसमें लगभग 50000 लोगों ने भाग लिया । इसी प्रकार 1934 में बिहार में आए भूकंप के बाद एक राहत शिविर स्थापित करने पर गाँधी जी ने भी उनके कार्य की सराहना की ।

1937 में बाबूजी दलित वर्ग लीग के प्रत्याशी के रूप में बिहार विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए । सरकार बनाने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें ढ़ेर सारा धन और मंत्री पद की पेशकश कर उनका समर्थन मांगा किन्तु बाबूजी ने अंग्रेजों की पेशकश को अस्वीकार करते हुए स्वतंत्रता सैनानियों के साथ जाना पसंद किया । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता इस तरह की देशभक्ति से प्रभावित हुए और गांधी जी ने कहा कि जगजीवन राम कठिन परीक्षा में शुद्ध सोने की तरह उभरे हैं। उसके बाद के कार्यों में भारत की आजादी और समाज सुधार के लिए

बाबूजी की महती राजनीतिक भागीदारी रही । बाबू जगजीवन राम ने सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और उन्हें दो बार जेल हुई, देश के कोने-2 में भारतवासी भारत की आजादी के लिए अपना जीवन, सुख, व्यवसाय, धन और सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार थे । बाबूजी जैसे स्वतंत्रता सैनानियों द्वारा दिखाई गई त्याग की भावना, देशभक्ति के कृत्य और सत्यनिष्ठा आधुनिक भारत के निर्माण हेतु हमारा मार्गदर्शन करती है । संविधान के निर्माताओं में से एक और संविधान सभा के महत्त्वपूर्ण नेता के रूप में बाबू जगजीवन राम ने सामाजिक समता और सामाजिक न्याय को हमारे संविधान में उल्लिखित आदर्शों में शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया ।

सामान्य तौर पर लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना और विशेष रूप से शोषित वर्ग का उत्थान उनके जीवन का मुख्य ध्येय बन गया । सामाजिक न्याय के साथ-साथ विकास यात्रा भी होनी चाहिए । भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है । हम आशा करते हैं कि एक राष्ट्र और अर्थव्यवस्था के रूप में हम निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे । साथ ही यह हमारा संवैधानिक और नैतिक कर्त्तव्य है कि कमजोर और सीमांत वर्गों को विकास की धारा से जोड़ा जाए । ऐसी विकास प्रक्रिया जो धनी और निर्धन के बीच, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, प्रदेशों और समूहों के बीच तथा महिला और पुरूष के बीच अंतर को समाप्त करती है, समावेशी एजेन्डा है जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए ।

बाबू जगजीवन राम स्वतंत्र भारत में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे जिन मंत्रालयों क्षेत्रों और मुद्दों से उनका बास्ता पड़ा उसमें सुधार लाने के लिए उन्होंने पुरजोर कोशिश की । सन् 1947 से 1952 तक भारत के पहले श्रम मंत्री के रूप में श्रम कल्याण के लिए नीतियां और कानून बनाया और देश की उत्पादन क्षमता में बहुत अधिक योगदान दिया । सन् 1952 से 1956 तक संचार मंत्री के रूप में उन्होंने निर्णय किया कि सभी जिले में टेलीफोन एक्सचेंज और सभी प्रमण्डलों में पब्लिक कॉल ऑफिस खोला जाए । इस तरह के दूरदर्शी कदम से संचार नेटवर्क का बहुत अधिक विस्तार हुआ ।

खाद्य और कृषि मंत्री के रूप में बाबू जगजीवन राम ने देश को भीषण सूखे की स्थिति से बाहर निकाला, हरित क्रांति लाए और भारत पहली बार खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हुआ । बाबूजी ने कृषि क्षेत्र की प्राथमिकताओं को नया स्वरूप दिया और कृषि अनुसंधान प्रबंधन प्रणाली को इस तरह से नवीकृत किया जिसमें वैज्ञानिक कुशलता और किसानों के अनुभव का अद्भुत संयोग था । अब, हमें दूसरी हरित क्रांति लाने की आवश्यकता है जिससे भारत कृषि क्षेत्र में महाशक्ति बनेगा । मेरा नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और किसानों से आग्रह है कि वे इस लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कार्य करें ।

गाँधी जी ने कहा था, "मैं ऐसे भारत के लिए काम करूंगा जिसमें अत्यंत गरीब व्यक्ति महसूस करेगा कि यह उनका देश है और जिसके बनाने में उनकी आवाज सुनी जाती है; एक

ऐसा भारत जहां कोई उच्च वर्ग और निम्न वर्ग का नहीं होगा; एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय के लोग सद्भावपूर्वक रहेंगे ।"

बाबूजी इसी आदर्श की प्राप्ति के लिए जीवन-पर्यंत प्रयासरत रहे । जुलाई, 1986 में उनका निधन हो गया । उनके निधन से एक ऐसे युग का अंत हो गया जो शायद आजादी के पूर्व से लेकर आजादी तक और वहां से एक जीवंत लोकतांत्रिक समाज की यात्रा के महत्त्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करता है । उनकी विरासत जीवित रहेगी और इससे युवा पीढ़ियों को सामाजिक और राजनैतिक क्रिया-कलाप तथा एक बेहतर समाज की सतत् खोज के लिए निरंतर प्रेरणा मिलती रहेगी ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं बाबू जगजीवन राम के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ ।

धन्यवाद,

जय हिन्द !